संस्कृति का वैश्वीकरण और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI)

सुनीता कुमारी, सहायक आचार्य, राजनीतिक विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय खाजूवाला, बीकानेर, 334023,
choudharysunitachotiya218@gmail.com

शोध सारांश

संस्कृति का वैश्वीकरण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के क्षेत्र में हो रहे विकास के आपसी संबंध पर यह शोध पत्र विचार करता है। वैश्वीकरण ने विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद और आदान–प्रदान को नया आयाम दिया है, जिससे संस्कृति, भाषा, और विचारों का एक वैश्विक नेटवर्क तैयार हुआ है। इसके परिणामस्वरूप, न केवल सामाजिक और आर्थिक संरचनाओं में परिवर्तन आया है, बल्कि डिजिटल और तकनीकी नवाचारों ने भी संस्कृतियों को एक–दूसरे के करीब लाया है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की प्रगति ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को और तेज किया है, क्योंकि AI ने विभिन्न संस्कृतियों को समझने, संरक्षित करने, और फैलाने के नए तरीके प्रदान किए हैं। इसके माध्यम से, विभिन्न सांस्कृतिक प्रथाओं और ज्ञान का डिजिटलीकरण किया जा रहा है, जिससे पारंपरिक संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के अवसर मिल रहे हैं।

इस शोध पत्र में यह भी चर्चा की गई है कि कैसे AI वैश्विक संस्कृति के संदर्भ में नैतिक और सामाजिक मुद्दों को जन्म दे रहा है, जैसे कि सांस्कृतिक विविधता की कमी, सांस्कृतिक पहचान का संकट, और सूचना की असमानता। अंत में, यह अध्ययन वैश्वीकरण और AI के सहयोग से एक ऐसे भविष्य की कल्पना करता है जिसमें दोनों के बीच सामंजस्यपूर्ण और सतत विकास की संभावना हो।